

इकाई—चार

अनुशासनात्मक ज्ञान एवं शालेय पाठ्यक्रम

सरंचना

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 शैक्षिक शिक्षा का महत्व
- 1.4 शिक्षा संबंधी आलोचनात्मक समझ
- 1.5 शैक्षिक अनुशासन का महत्व
- 1.5.1 सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अनुशासन का महत्व और सामाजिक संबंध
- 1.5.2 शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अनुशासन का महत्व और शैक्षिक संबंध
- 1.5.3 व्यावसायिक दृष्टिकोण में अनुशासन का महत्व एवं व्यावसायिक संबंध
- 1.6 व्यावसायिक शिक्षा का महत्व एवं विद्यालय का दायित्व, चुनाव प्रक्रिया, व्यवसायिक क्षेत्र में चुनाव, विचारणीय तथ्य आदि।
- 1.7 सारांश
- 1.8 प्रश्न
- 1.9 प्रगति जाँच हेतु उत्तर
- 1.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1.1 प्रस्तावना

समझ एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है। धारणा और कल्पना दोनों का संयोजन है। वेलरटाइन के अनुसार समझ एवं विचारों का उद्देश्य सोच के प्रति जुड़े प्रवाह से हैं।

वुडवर्थ ने समझ प्रक्रिया में निम्न 5 तत्वों का वर्णन किया है।

1. उद्देश्य
2. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयास
3. तथ्यों से पूर्व अनुभवों का स्मरण
4. पूर्व अनुभव का नया रूप
5. विभिन्न छवियों की गतिशीलता एवं आंतरिक भाषा।

मनोवैज्ञानिक जेम्स एस.रॉस ने शिक्षा मनोविज्ञान की अपनी पुस्तक में समझ को वर्णित किया है। संज्ञानात्मक रूप से मानसिक प्रक्रिया मन पर आधारित एक मानसिक गतिविधि है जो बाहर

दुनिया में मौजूद नहीं हो सकता। हम कुछ परिस्थितियों में अंतर कर सकते हैं कि समझ की भिन्न विधियों के आधार पर नहीं परंतु प्रकृति की मन-आधारित वस्तु के द्वारा भिन्न स्तरों को निर्धारित किया जा सकता है।

1.3 शैक्षिक शिक्षा का महत्व

पहला स्तर अवधारणात्मक समझ है जिसे परिभाषित किया जा सकता है “उपस्थित मानसिक क्रिया संवेग इंद्रियों के साथ वस्तुओं को प्रभावित कर सकती है।” फिर भी हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वास्तव में विषय के प्रति समझ यह बाहरी जगत की कोई वस्तु नहीं है बल्कि यह उत्पादित वस्तु है जो मन से संबंधित है। इन दोनों के बीच का संबंध जटिल और अस्पष्ट है। हम अपने मन के भीतर कोई भी भौतिक वस्तु को ना ही रख सकते हैं और ना ही जाँच कर सकते हैं। उदाहरणस्वरूप जब मैं किसी पेन (कलम) को देखता हूँ तो वह कलम नहीं होता जो कि मेरी समझ के अनुसार एक वस्तु है बल्कि वह एक लहर है जो मेरी आँखों में भौतिक एवं रसायनिक प्रक्रियाओं के रूप में है जिसके परिणामस्वरूप वह मस्तिष्क के कुछ क्षेत्र के ऊतकों को प्रवाह है जो सक्रिय रूप से क्रियाशील है। यह भौतिक एवं मानसिक विश्व की रहस्यमय खाई है, मन आधारित वस्तु है जो हमें प्रतीत हो सकती है। इस तरह की मन आधारित वस्तु, जिसका परिणाम संवेग-इंद्रियों का उद्दीपक है उसे संवेदना कहा जा सकता है। मनोवैज्ञानिकों ने विस्तृत किया कि चेतना विश्लेषण में शिक्षा के प्रति संवेदना यह मुख्य मानसिक तत्व है और मन भी संवेदना का आधार है। लेकिन हम आवश्यक गतिविधियों को भूल जाते हैं। अतः हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि मन-आधारित शिक्षा संबंधी क्रियायें संज्ञानात्मक समझ का ही भाग है, बिना क्रियाओं के हमारा अस्तित्व नहीं बन सकता है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप सक्षम होंगे –

- शिक्षा संबंधी आलोचनात्मक समझ को विकसित करना।
- अनुशासन (विषय) के अंतर्गत वैज्ञानिक समझ एवं सामाजिक वैज्ञानिक को समझना।
- विषयात्मक ज्ञान के महत्व को स्वीकार करना।
- व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को समझना।
- शालेय विषयों के साथ व्यावसायिक शिक्षा की समालोचना अपने शब्दों में करना।

प्रगति की जाँच

नोट –

- जो रिक्त स्थान नीचे दिया गया है वहाँ अपने उत्तर को लिखें।

- जो इकाई के अंत में उत्तर दिये उसके साथ अपने उत्तर की तुलना करना।

प्रश्न 1. आलोचनात्मक समझ को विस्तृत करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 शिक्षा संबंधी आलोचनात्मक समझ

शिक्षा संबंधी आलोचनात्मक समझ के प्रकार

शिक्षा संबंधी आलोचनात्मक समझ में सोच, विचार, धारण की उपयोगिता की आवश्यकता है जो निम्न रूप से विस्तृत की जा सकती है:-

- ❖ शिक्षा संबंधी प्रत्यक्ष समझ- यह समझ निम्न स्तर से ही आवश्यक है यह व्यक्ति में शिशु अवस्था में ही होती है।
- ❖ कल्पनात्मक समझ में कोई वास्तविकता नहीं होती है। प्रत्यक्ष का अभाव होता है। स्मृति के आधार पर समझ विकसित होती है। इसमें छवि की आवश्यकता होती है।
- ❖ शिक्षा में अवधारणा की समझ का महत्वपूर्ण स्थान है इसमें भाषा ज्ञान की आवश्यकता होती है।

शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा को आलोचना ढंग से समझने के लिए संकल्पना के निर्माण की भी भूमिका है। किसी भी वस्तु की संकल्पना हमारे पूर्व अनुभवों पर आधारित होती है जैसे पशु हमारे वातावरण का एक हिस्सा है। वो चार पैर पर चलते हैं। चार पैर पर चलना उनका एक सामान्य गुण एवं विशेषता है जो हमारे पूर्व अनुभवों पर आधारित है। उसी तरह पक्षियों को हमने उड़ते देखा, 'उड़ना' पक्षियों का आम लक्षण है पूर्व अनुभवों के आधार पर सामान्यीकरण किया जा सकता है। यह उड़ान पक्षियों के संदर्भ में एक अवधारणा है। शिक्षा के क्षेत्र में इसे जोड़ा जा सकता है ताकि बालक अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर नवीन विचार, धारणा, संकल्पना एवं प्रत्यय का विकास कर सके।

शिक्षा में विषय-वस्तु की अवधारणा को कैसे विस्तृत करे इसके लिए कई प्रक्रियाओं को ध्यान में रखना होगा।

जब बच्चा किसी वस्तु या परिस्थिति को देखता है तब कुछ वस्तुओं के आधार पर वह प्रतिमाओं का प्रत्यक्षीकरण करता है। इन अवधारणा का निर्माण उन्हीं के द्वारा होता है। शिक्षा के क्षेत्र में इस निरीक्षण प्रक्रिया का प्रयोग किया जा सकता है।

विषय की विशेषता का विशिष्ट गुण निर्देशित करने के लिए विश्लेषण की प्रक्रिया अहम है उदाहरण— जब गाय, भैस या अन्य प्राणियों के गुणों का विश्लेषण करने के बाद एक बच्चा किसी संकल्पना का गठन करता है। शिक्षा में विश्लेषण प्रक्रिया का होना आवश्यक है ताकि वह अपनी रुचि के अनुसार आगे चलकर अपने व्यवसाय की नियुक्ति कर सकता है। यह शैक्षिक संकल्पना में विषय-वस्तु के गुणों की समानता एवं भिन्नता के अंतर को सिद्ध करने में सहायक है। उदाहरण— विद्यार्थी अनेक प्रकार के प्राणियों को देखकर उनके मध्य भी अंतर कर सकता है। घोड़े एवं गाय के मध्य अंतर वो बता सकता है उसी तरह मानव एवं पशुओं के मध्य भिन्नता को भी बता सकता है कि इंसान दो पैरों की सहायता से एवं पशु चार पैरों की सहायता से चलते हैं साथ ही ध्वनियों के मध्य अंतर या भेद के सामान्य गुण को वह अमूर्तरूप में वर्गीकृत करता है।

अतः विषय-वस्तु की अमूर्तता, विश्लेषण अंतर के आधार पर छात्र किसी एक विषय की निश्चित गुणवत्ता का पता लगा सकता है और इसी आधार पर वह सामान्यीकरण कर सकता है।

1.5 शैक्षिक अनुशासन का महत्व

अनुशासन (विषय) के अतर्गत वैज्ञानिक समझ एवं सामाजिक वैज्ञानिक समझ

हमें वैज्ञानिक एवं सामाजिक वैज्ञानिक शब्दों को लेकर भ्रमित नहीं होना है हमें वैज्ञानिक विषय जैसे जीवविज्ञान, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्रको अलग करके नहीं सोच सकते और ना ही सामाजिक वैज्ञानिक समझ को सामाजिक विषय जैसे समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र नहीं मान सकते हैं।

वैज्ञानिक सोच का अर्थ ज्ञान को खोजना या ज्ञान को प्राप्त करना। वह ज्ञान जिससे की व्यक्ति को व्यावसायिक आधार प्राप्त हो सके। ज्ञान प्राप्त करने के लिए तर्क संगत साधनों का नियोजन एवं अधिग्रहण करना है। कार्य एवं कारण का आधार ही विज्ञान है ये दोनों तत्व एक दूसरे के पर्यायी है, हम इन्हें अलग नहीं कर सकते हैं। इन दोनों के मध्य कोई अंतर नहीं किया जा सकता है।

शिक्षा में गणितीय समझ या सोच

गणितीय समझ दूसरे अर्थ में प्राकृतिक वैज्ञानिकता है। निष्कर्ष रूप में ऑकड़ों एवं तथ्यों के आधार पर इसे प्रस्तुत किया जाता है जैसे $2+2=4$ । यह पूर्ण रूप से तर्कसंगत एवं तार्किक है। परंतु इसे पूर्ण रूप से सही नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसके ज्ञान का क्षेत्र व्यापक है।

अन्य विषयों का विषयात्मक ज्ञान

हमें विषय में प्रवेश करने से पूर्व 'अनुशासन' शब्द की सार्थकता पर ध्यान देना आवश्यक है। सामान्य रूप से 'अनुशासन' शब्द का अर्थ आज्ञा, नियमों एवं आदेशों को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण का अभ्यास करना है तथा व्यवहार एवं परिस्थितियों को नियंत्रित करना। इसी शब्द का शैक्षिक क्षेत्र में व्यापक रूप से प्रयोग किया गया है। इस इकाई में इस शब्द को भिन्न अर्थ में लिया गया है। यहाँ पर इसका तात्पर्य शैक्षिक अनुशासन (विषय) से है। अर्थात् ज्ञान के क्षेत्र एवं जहाँ लोग विषय को पढ़ते तथा अधिगम करते हैं। हम यहाँ पर शैक्षिक संस्था के संदर्भ में विचार-विमर्श करेंगे।

अनुशासन या विषय

ज्ञान एवं सूचना के विस्फोट के साथ हमारे आस-पास अनुशासन के वातावरण को पा सकते हैं, अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम अनुशासन एवं विषय को विस्तृत करें।

अनुशासन एवं विषय का एक-एक अंश पूर्ण रूप से एक दूसरे से संबंधित है ज्ञान का विस्तृत स्वरूप संपूर्ण विश्व में समाहित है इस प्रकार विज्ञान अनुशासन का ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में मौजूद है जो कि खगोल विज्ञान से खगोल भौतिकी तक फैला हुआ है। इसके विपरीत यह विषय अनुशासन का एक छोटा-सा अंश है। इस प्रकार कला अनुशासन में भाषा, दर्शनशास्त्र, मानव विज्ञान, इतिहास, भूगोल यह विषय शामिल है। ये सभी विषय अनुशासन के अंतर्गत आते हैं।

शैक्षिक अनुशासन ज्ञान की एक शाखा है इसमें विशेषज्ञों, लोगों, परियोजनाओं, समुदायों, चुनौती, अध्ययन, जॉच, अनुसंधान क्षेत्र की शामिल किया गया है। जिसका शैक्षिक अनुशासन में दृढ़ रूप से सहचर्य है। उदाहरण के लिए विज्ञान की शाखाओं को सामान्य रूप से वैज्ञानिक विषयों के रूप में लिया गया है जैसे— भौतिक विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान आदि।

आमतौर पर शैक्षणिक विषयों के साथ जुड़े व्यक्ति को विशेषज्ञ के रूप में उद्धृत किया जाता है। दूसरे, जो उदार कला या प्रणाली सिद्धांत का अध्ययन किया है जिससे कि कोई विशिष्ट शैक्षिक अनुशासन पर ध्यान केंद्रित कर उसे सामान्य रूप से वर्गीकृत कर सके।

जब कभी समस्या संबोधित होती है वो अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्र के संकीर्ण केंद्रियता को जन्म देती है जब अशैक्षिक अनुशासन के दृष्टिकोण में मत रखे जाते हैं तो संकल्पना के संबंध में विचारों में भिन्नता हो सकती है। यद्यपि स्वयं के द्वारा शैक्षिक अनुशासन कम या अधिक केंद्रित अभ्यास, विध्वत्ता जैसे बहुअनुशासन, अंतर्अनुशासन का जो कि बहु शैक्षिक अनुशासन द्वारा एकीकृत होती है।

प्रगति की जाँच

नोट –

- जो रिक्त स्थान नीचे दिया गया है वहाँ अपने उत्तर को लिखें।
- जो इकाई के अंत में उत्तर दिये उसके साथ अपने उत्तर की तुलना करना।

प्रश्न 2. अनुशासन के अंतर्गत वैज्ञानिक समझ एवं सामाजिक वैज्ञानिक समझ में तुलना करें।

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 3. अनुशासन या विषय के अंतर को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।.....

.....

.....

.....

शैक्षिक अनुशासन का महत्व

शैक्षिक अनुशासन कई तत्वों को जोड़ने की कड़ी है जैसे सामाजिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक। इनतत्वों का महत्व आगे व्यावहारिक दृष्टि से आवश्यक है। इन तत्वों की चर्चा निम्न की गयी है।

1.5.1 सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अनुशासन का महत्व और सामाजिक संबंध—हमारे जीवन का विकास समाज में भिन्न विषयों के अस्तित्व के विकास के साथ रहकर होता है। कई तरह के अनुशासन समाज में आये जो ज्ञान के विभिन्न प्रकारों के प्रतिनिधि के रूप में उनका अस्तित्व रहा एवं जिनका सामाजिक विकास एवं सोच में भी योगदान रहा। कई शैक्षिक संस्था एवं महाविद्यालय में कई

अनुशासन, को सीखा या अधिगम किया गया है वह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक आचारण है। माना कि सभी व्यक्ति किसी खास अनुशासन से प्रत्यक्षात्मक रूप से प्रभावित ना हो परंतु संक्षेप में प्रत्येक अनुशासन का समाज पर प्रभाव पड़ता है और यही से अपने अपने सामाजिक संदर्भ में विभिन्न विषयों द्वारा मानव जीवन पहले से कही बेहतर साबित हुआ है। हम बिना अनुशासन के सामाजिक परिप्रेक्ष्य की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं एवं प्रत्येक विषय (अनुशासन) अपने आप में इतना सक्षम है कि वह समाज को प्रभावित कर सकता है।

1.5.2 शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अनुशासन का महत्व एवं शैक्षिक संबंध—भले ही अनुशासन को शैक्षिक संस्थाओं में नहीं पढ़ाया जा रहा हो परंतु फिर भी वह शैक्षिक संबंध को जोड़ने का साधन है। प्राचीन समय में अनुशासन व्यक्तिगत प्रयासों के परिणाम के रूप में आये और वे शैक्षिक रूप से महत्वपूर्ण साबित हुए एवं धीरे-धीरे शैक्षिक संस्था में शुरू किये गये। सभी अनुशासन को शैक्षिक पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया तथा विशिष्ट जरूरतों को ध्यान में रखकर परिस्थिति के अनुसार तेजी से विकसित किया गया। अधिक से अधिक परिणामों में पाया गया कि कई अनुशासन का अधिक विकास तभी हुआ जब उन्हें शिक्षा में प्रस्तुत किया गया।

1.5.3 व्यावसायिक दृष्टिकोण में अनुशासन का महत्व एवं व्यावसायिक संबंध—प्रत्येक अनुशासन ने भिन्न तरीकों एवं परतों में मानव शक्ति को संलग्न करने का वादा किया है। अतः प्रत्येक अनुशासन व्यावसायिक संबंध रखता है। उदाहरणार्थ: प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, जो एक अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है यहाँ अधिक मात्रा में जनशक्ति कार्यरत है। इस क्षेत्र में व्यावसायिक कार्य जैसे तकनीशियन, प्रौद्योगिकी, अभियंता, प्रचालक, प्रोग्रामर, विकासक आदिव्यावसायिक संबंधों की सीमा में भिन्न अनुशासन हो सकते हैं परंतु वो सभी व्यावसायिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

शिक्षा में विषयों (अनुशासन) का वर्गीकरण

विभिन्न विद्ववानों के अनुसार अनुशासन का वर्गीकरण भिन्न होता है इन वर्गीकरणों में जाने से पूर्व हमें विवेकपूर्ण ढंग से समझना है कि भिन्न विश्वविद्यालयों के अंतर्गत अनेक अनुशासनों का भिन्न वर्गीकरण है। व्यवहारिक रूप में भिन्न अनुशासन बहु-अनुशासन, अंत-अनुशासन जो कि प्रचलित है ये संकल्पना एक-दूसरे से अंतर्मिश्रित है। कुछ ज्ञान के क्षेत्र का विकास एवं विस्तार काफी अधिक है एवं कुछ विश्वविद्यालयों ने पहले ही भिन्न अनुशासनसे

संबंधित विभाग बनाये हैं। जैसे भौतिक शास्त्र एवं साहित्य आदि जो छात्रों के लिए भ्रम की स्थिति का एक कारण हो सकता है। कुछ विश्वविद्यालयों ने अनुशासन के रूप में विषय को मान्य किया है एवं विश्वविद्यालय में स्थापित भी किया है। अनुशासन के अंतर्गत कुछ विषयों को पहले ही इसमें शामिल किया गया है और उसके महत्व को मान कर उसके शिक्षण विधि को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसलिए प्रत्येक अवस्था में जो शब्द 'अनुशासन' एवं 'विषय' है उसे पर्यायवाची कहा गया है।

आज के वर्तमान विश्वविद्यालय में शैक्षिक अनुशासन का वर्गीकरण किया गया है जो निम्न है :-

1. **मानविकी या कला विषय:-** इस वर्ग के अंतर्गत भाषा, साहित्य, धर्म, दर्शन, मानव, नीति, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र एवं राजनीति शास्त्र को शामिल किया गया है।
2. **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी अनुशासन:** इस वर्ग के अंतर्गत भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणी शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान एवं वैज्ञानिक तकनीक को शामिल किया गया है।
3. **गणित अनुशासन :** इस वर्ग के अंतर्गत अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, गतिशीलता एवं सांख्यिकी को शामिल किया गया है।
4. **चिकित्सा विज्ञान अनुशासन:** इस वर्ग के अंतर्गत चिकित्सा (दवा), युनानी, होम्योपैथी, पशु चिकित्सा, शल्य चिकित्सा आदि को शामिल किया जाता है।
5. **कृषि अनुशासन:** इस वर्ग के अंतर्गत कृषि, बागवानी, आदि को शामिल किया गया है।
6. **विधि अनुशासन :** इस वर्ग के अंतर्गत अपराधिक कानून, हिंदु कानून, मुस्लिम कानून, नागरिक कानून, क्षति का कानून, अंतर्राष्ट्रीय कानून, एवं संवैधानिक कानून को शामिल किया गया है।
7. **वाणिज्य अनुशासन :** इस वर्ग के अंतर्गत लेखा, बैंकिंग, बहीखाता और उससे संबंधित विषयों को शामिल किया गया है।
8. **ललित कला अनुशासन:** इस वर्ग के अंतर्गत ड्राईंग, पेंटिंग, संगीत, नृत्य आदि को शामिल किया गया है।
9. **शिक्षा अनुशासन :** इस वर्ग के अंतर्गत शिक्षक शिक्षा, प्रशिक्षण एवं उसके भिन्न रूपों को शामिल किया गया है।

शिक्षा में विषयों (अनुशासन) की विशेषताएँ

शिक्षा के अंतर्गत विषयों की विशेषताएँ निम्नलिखित है :

1. प्रत्येक अनुशासन अध्ययन का एक विशिष्ट क्षेत्र है और इसकी एक विशिष्ट सामग्री है।
2. प्रत्येक अनुशासन का अपना अद्वितीय इतिहास एवं परंपराएँ हैं।
3. प्रत्येक अनुशासन सोच, विचार, समझ के विशिष्ट क्षेत्र के साथ कार्य करता है।
4. प्रत्येक अनुशासन की अपनी अनूठी संरचना है।
5. प्रत्येक अनुशासन ने शिक्षण-अधिगम के स्वयं के विधियों को विकसित किया है।
6. प्रत्येक अनुशासन की अनुसंधान की अपनी विधि है।
7. प्रत्येक अनुशासन ने अनुसंधानों एवं अनूठे अनुभवों के आधार पर अपने स्वयं के विशिष्ट तरीकों को संगठित कर परिभाषित किया है।
8. प्रत्येक अनुशासन (विषय) शिक्षा के स्तर को विकसित करने के लिए किया जाता है।

हमने उपर के अध्याय में अतः शिक्षा का हमारे जीवन के सभी तत्वों में बहुमूल्य स्थान है, हमारा बहुमुखी विकास करती है तथा हमें ज्ञान की ओर ले जाती है। शिक्षा में सभी पक्षों का विकास वांछनीय है। शिक्षा के व्यावसायिक पक्ष को जोड़ दिया जाय तो छात्र आगे चलकर अपने रुचिनुसार विषय का चुनाव करके अपने पैर पर खड़े हो सकता है तथा अपने भावी जीवन को सुरक्षित कर सकता है आदि बातों का अध्ययन प्रस्तुत इकाई में किया है।

1.6 व्यावसायिक शिक्षा का महत्व एवं विद्यालय का दायित्व, चुनाव प्रक्रिया, व्यवसायिक क्षेत्र में चुनाव, विचारणीय तथ्य आदि।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व

व्यावसायिक शिक्षा सभी के जीवन का महत्वपूर्ण पहलु होता है “जीविकोपार्जन की अपेक्षा जीवन-निर्माण अधिक महत्वपूर्ण है।” इस प्राचीन कहावत से आकृष्ट अनेक लेखकों और विद्यालय प्रशासकों में जीवन-निर्माण संबंधी शिक्षा को समझ कर व्यावसायिक शिक्षा को थोड़ा कम समझा जाता है कदाचित हम यह भूल जाते हैं कि अधिकांश व्यक्तियों के लिए जीवन-निर्माण और जीविकोपार्जन बिल्कुल अभिन्न होते हैं और व्यावसायिक सफलता जीविकोपार्जन की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होती है। व्यक्ति शून्य में जीवन निर्माण नहीं करता।

शिक्षा की प्रक्रिया के समान ही व्यावसायिक शिक्षा की प्रक्रिया भी व्यक्ति के जीवन में चिरकाल तक चलती रहती है। यह कोई ऐसी क्रिया अथवा क्रियाओं का ऐसा लघु क्रम नहीं, जो यह बतलाए कि किसी को कौन-सा व्यवसाय अपनाना चाहिए, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। इसका काम है कुछ ऐसे साधनों एवं विधियों द्वारा अपने तथा अपने व्यवसायों के संबंध में

व्यक्ति को विस्तृत सूचना क्षेत्र से परिचित कराना, जिन पर बाद में विचार किया जाएगा। शिक्षा व्यक्ति को उसकी व्यावसायिक समस्याओं के समाधान के लिए क्रिया-विधि अर्जित करने में भी सहायता करती है, जिसके फलस्वरूप वह इस योग्य हो जाता है कि अपने जीवन में कभी-भी आवश्यक अथवा वांछनीय होने पर अपनी व्यावसायिक योजना में बुद्धिसंगत परिवर्तन कर सके।

व्यक्ति के जीवन में विद्यालय-उपक्रम के रूप में यह उस बिंदु से आरम्भ होती है जब कि वह भावी व्यवसाय के लिए निश्चित रूप से सार्थक चुनाव करना अनिवार्य समझने लगता है। सामान्य बच्चे में प्रायः यह सातवीं श्रेणी में आरम्भ होती है, जब उसे सामान्य वाणिज्यात्मक तथा व्यावहारिक कला-पाठ्यक्रमों में चुनाव की आवश्यकता होती है। इसे विद्यालय-उपक्रम के रूप में तब तक चलना चाहिए जब तक व्यक्ति बुद्धिमानीपूर्वक चुने गए व्यवसाय में अपनी योग्यताओं के अनुरूप सफलतापूर्वक काम न करने लगे।

व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत विद्यालय की भूमिका

मेयर्स ने विद्यालय की आठ सेवाओं का उल्लेख किया है:-

1. व्यावसायिक सूचना सेवा
 2. आत्म-विश्लेषण सेवा
 3. व्यक्तिगत ऑकड़े संकलन सेवा
 4. परामर्शदाता सेवा
 5. व्यवसाय तैयारी सेवा
 6. नियुक्ति सेवा
 7. समायोजन सेवा
 8. अनुसंधान सेवा
1. **व्यवसायगत सूचना सेवा** : इस सेवा द्वारा व्यवसाय सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं। विद्यालय का यह काम हो जाता है कि वह विभिन्न व्यवसायों से संबंधित सूचनाएँ एकत्र करे तथा छात्रों को उनसे अवगत कराए। इस सेवा द्वारा व्यवसाय का महत्व, कार्य का स्वभाव, कार्य हेतु योग्यता एवं प्रशिक्षण, कार्य की दशा एवं समय, उन्नति के अवसर, कार्य से सुविधा-असुविधा कार्य हेतु व्यक्तिगत क्षमताओं की आवश्यकता तथा इसी प्रकार की अन्य सूचनाएँ एकत्रित की जा सकती हैं। इस प्रकार की सेवाएँ या तो विषय-अध्ययन का एक अंग हो सकती हैं अथवा इनसे अवगत कराने हेतु प्रथम प्रबंध किया जा सकता है। ये सूचनाएँ कई प्रकार से दी जा सकती हैं।
2. पाठ्य-क्रम के माध्यम से
 3. देशाटन एवं उद्योग के भ्रमण के माध्यम से

4. पुस्तकों के माध्यम से
5. चित्रादि के माध्यम से
6. फिल्म ; स्लाइड्स इत्यादि के माध्यम से
7. भाषण एवं वाद-विवाद के माध्यम से
8. रेडियों तथा टेलीविजन के माध्यम से

2. आत्म-विश्लेषण सेवा : इस सेवा के माध्यम से छात्र उन सूचनाओं को एकत्रित करते हैं जो उनकी योग्यताओं के अनुकूल होती है। इन सूचनाओं में छात्र उन्हीं सूचनाओं के अनुकूल होती है। इन सूचनाओं में छात्र उन्हीं सूचनाओं को सम्मिलित करते हैं जो उनकी योग्यता, क्षमता, रुचि, अभिरुचि, सीमा, व्यक्तिगत दायित्व इत्यादि के अनुरूप होती है। इस सेवा द्वारा छात्र को स्वयं का भी ज्ञान होता है। यदि छात्र किसी व्यवसाय को चुनता है तो उसे न केवल व्यवसाय ही, वरन् अपनी ज्ञात एवं अज्ञात शक्तियों का भी अध्ययन करना चाहिए। सुकरात का कहना है कि 'अपने को देखो' एक महत्वपूर्ण कहावत है, एवं आत्म-विश्लेषण स्वयं को ज्ञात करने के अलावा और कुछ नहीं। अतः जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु आत्म-विश्लेषण सेवाएँ महत्वपूर्ण है।

3. **व्यक्तिगत ऑकडे संकलन सेवा :** इस प्रकार की सेवा में कार्य परामर्श सेवा को सहायता देना है। इसमें छात्र-छात्राओं के भिन्न-भिन्न योग्यताओं, रुचियों के अध्ययनों का संकलन किया जाता है।
4. **व्यवसाय की तैयारी सेवा :** इस प्रकार की सेवा के माध्यम से व्यवसाय में प्रवेश से पूर्व वांछित प्रशिक्षण सुविधाओं से छात्र को अवगत कराया जाता है। यह स्वयं-सिद्ध है कि व्यवसाय में सफलता पर्याप्त मात्रा में प्रशिक्षण पर निर्भर है। इस कार्य में छात्रों को सहायता की आवश्यकता होती है कि प्रशिक्षण कहाँ, कैसे, कब तथा क्यों प्राप्त किया जा सकता है। यह सूचना देना व्यवसाय हेतु पूर्व-निर्माण सेवा का कार्य है।
5. **नियुक्ति सेवा :** जब छात्र व्यवसाय-चयन कर चुकने के बाद उचित प्रशिक्षण प्राप्त करता है तो विद्यालय की नियुक्ति सेवा का यह कार्य हो जाता है कि वह छात्र को उपयुक्त व्यवसाय में प्रवेश करा दे। उचित स्थान प्राप्त करने में सहायता की आवश्यकता पड़ती है।
6. **समायोजन सेवा :** छात्र के व्यवसाय में प्रवेश करने के पश्चात् यह विद्यालय का काम हो जाता है कि वह छात्र से उसके जीवन में भी संपर्क बनाये रखे जिससे उसकी सफलता एवं असफलताओं का ज्ञान विद्यालय को होता रहे। इससे विद्यालय भी अपनी सेवाओं का मूल्यांकन कर सकता है।

7. **अनुसंधान सेवा** — इस सेवा का प्रमुख कार्य विद्यालय में व्यवसाय निर्देशन योजना में सुधार लाना है, निर्देशन के नये-नये तरीके तलाश करना है।

व्यावसायिक शिक्षा की प्रक्रिया

किसी भी स्थिति में यह स्पष्ट है कि व्यक्ति की व्यावसायिक सफलता उसकी तैयारी के गुण एवं उसकी पूर्णता तथा आजीविका के समुचित चुनाव पर निर्भर है। व्यावसायिक शिक्षा के प्रक्रिया पर विचार करने में जहाँ कहीं और जब कभी संभव हो, व्यक्ति को उसकी व्यावसायिक तैयारी अर्जित करने में चाहे वह उस कार्यक्रम का अंग हो या नहीं सहायता प्रदान करना आवश्यक है। सूचना-पाठ्यक्रमों, परीक्षात्मक अनुभवों और व्यक्तिगत परामर्श के सहारे अपने कार्य को चुनने में सहायता प्राप्त कर अब ये छात्र अपनी तैयारी की योजना बनाने में सहायता के लिए तैयार है, चाहे विद्यालय तंत्र में प्राप्त हो अथवा इसके बाहर और चाहे विशेष तैयारी शीघ्र ही शुरू हो या बाद के लिए स्थगित हो। एक विद्यालय तंत्र जो व्यावसायिक निर्देशन के व्यापक कार्यक्रम को चलाने का प्रयास करता है, वास्तव में कुछ व्यावसायिक तैयारी प्रदान करने तथा व्यक्तियों को उनकी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति-संबंधी तैयारी की योजना बनाने में सहायता करने के लिए बाध्य होगा।

व्यावसायिक शिक्षा की प्रक्रिया के प्रकार:-

1. नियुक्ति प्रारंभ होने के पहले की तैयारी
 2. नियुक्ति के संबंध में तैयारी
 3. आजीविका-परिवर्तन की तैयारी
1. **नियुक्ति प्रारंभ होने के पहले की तैयारी:-** उच्च विद्यालयों में वाणिज्यात्मक कक्षाओं का संगठन किया गया और कुछ बड़े नगरों में उच्च विद्यालय के लड़के-लड़कियों को व्यापार संबंधी आजीविकाओं की तैयारी प्रदान करने के विभिन्न वाणिज्यात्मक उच्च विद्यालयों की स्थापना की गई। इस नेतृत्व का अनुसरण करते हुए गृह-कला अथवा गृह-निर्माण पाठ्यक्रम विकसित किए गए, ग्रामीण युवाओं के लिए कृषि कक्षाएँ संगठित की गई तथा लड़के-लड़कियों को औद्योगिक आजीविकाओं के लिए तैयार करने के निमित्त उच्च विद्यालय-कक्षाओं अथवा विशेष विद्यालयों की स्थापना की गई।
2. **नियुक्ति के संबंध में तैयारी :** नियुक्ति के संबंध में संचालित व्यावसायिक तैयारी तीन सामान्य प्रकार की होती है। पहले प्रकार में विद्यार्थी विद्यालय के पर्यवक्षण में रहता है और उसकी नियुक्ति प्रधानतः उसकी व्यावसायिक तैयारी योगदान के साधन के रूप में समझी जाती है। कुछ स्थितियों में आधा समय विद्यालय में बिताता है और आधा काम में जबकि कुछ अन्य स्थितियों में विद्यालय में व्यतीत समय का अनुपात कम होता है।

दूसरे प्रकार में वह प्रधानतः एक कर्मचारी होता है और विद्यालय पहले से संलग्न कार्य अथवा अन्य भावी कार्य के लिए उसे अधिक अच्छी तरह तैयारी करने में सहायता प्रदान करता है। विद्यालय में प्रति सप्ताह केवल कुछ घंटे बिताना पड़ता है। तीसरे प्रकार में सीखने वाला विद्यालय में बिल्कुल समय बिताए बिना ही कार्य के संबंध में कुशलता एवं ज्ञान प्राप्त कर लेता है। पहले प्रकार में 'सहकारी कार्यक्रम और विविध आजीविका' संबंधी कार्यक्रम होते हैं। दूसरे प्रकार में पर्यवेक्षित शिक्षुता आंशिक काल विद्यालय वयस्कों के लिए संध्या व्यावसायिक कक्षाएँ, कभी-कभी इन तीनों को समन्वित रूप से 'अनवरत विद्यालय' कहते हैं। तीसरे प्रकार के काम के समय प्रायः फोरमैन या सहकर्मचारी द्वारा प्रदान की गयी अल्पाधिक अनौपचारिक शिक्षा निहित रहती है।

3. **आजीविका परिवर्तन की तैयारी :-** कामकाज या व्यवसाय में परिवर्तन के लिए तैयारी प्रदान करने की आवश्यकता को जनता के ध्यान में आकर्षण ढंग से लाया गया है। यदि मंदी की अवस्थाओं अथवा अन्य कारणों से सेवा से मुक्त करने की बात छोड़ भी दी जाय, तो भी उद्योग संबंधी बेरोजगारी, नये उद्योगों के विकास एवं आजीविकाओं में एच्छिक परिवर्तनों के कारण यह एक स्थायी समस्या बन जाएगी इसमें कोई संदेह नहीं।

इस परिस्थिति का सामना करने के लिए औद्योगिक पुनर्शिक्षा की पर्याप्त व्यवस्था आवश्यक है। कुछ स्थितियों में पुराने कार्य को छोड़ने के पहले ही परिवर्तन की प्रत्याशा कर ली जाती है और आवश्यक तैयारी भी प्राप्त कर ली जाती है। अन्य स्थितियों में अचानक परिवर्तन आ जाता है और कर्मचारी को नए कार्य में लग जाना पड़ता है। अनेक स्थितियों में परिवर्तन के साथ-साथ बेरोजगारी की एक लंबी अवधि आती है और जब व्यक्ति बेरोजगार रहता है तो यह तैयारी प्राप्त की जाती है।

व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत व्यवसाय का चयन करते समय विचारणीय तथ्य किसी भी व्यवसाय का चयन करते समय प्रत्येक व्यक्ति को सर्वप्रथम उस व्यवसाय का अध्ययन करना आवश्यक है। इसके लिए कौन-कौन सी सूचना आवश्यक है कौन सी नहीं इसका विस्तृत विवरण बहुत से विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से किया है। किसी भी व्यवसाय का चुनाव करते समय किन बातों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए इस पर निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं।

1. **व्यवसाय का महत्व :** इसके अंतर्गत हमें देखना चाहिए कि व्यवसाय का सामाजिक महत्व क्या है? इसमें कितने व्यक्ति रोजगार प्राप्त करते हैं? क्या व्यवसाय विकसित अवस्था में है या विकास की तरफ अग्रसर हो रहा है?

2. **कार्य का अनुभव:** कार्य किस प्रकार का है? उसकी प्रकृति क्या है? इस बात की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।
3. **कार्य की दशाएँ :** यह भी देखना जरूरी है कि कर्मचारियों को किस प्रकार की परिस्थितियों में कार्य करना पड़ता है? क्या कार्य चहारदीवारी के अंदर करना पड़ता है? क्या भ्रमण पर भी जाना पड़ता है? सफाई कैसी है? प्रकाश, हवा एवं पानी का क्या प्रबंध है? कितने घंटे कार्य करना पड़ता है? इत्यादि बातों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।
4. **व्यवसाय के लिए योग्यताएँ :** व्यवसाय कार्य किस प्रकार की योग्यता चाहता हैं। तो क्या क्रिया समस्त शरीर से करनी पड़ेगी या शरीर के कुछ विशिष्ट अंगों से यथा—मुँह, आँख, हाथ आदि। यदि मानसिक है तो कितनी बुद्धि—लब्धि चाहिए? कितने संवेग चाहिए? कितना धैर्य, साहस, स्थितरा चाहिए? कैसा व्यक्तित्व चाहिए? इत्यादि तथ्यों को देखना चाहिए।
5. **वांछित प्रशिक्षण:** इस बात का पताप लगाना चाहिए कि अमुक व्यवसाय हेतु कितनी सामान्य शिक्षा तथा किस प्रकार के विशिष्ट व्यवसाय प्रशिक्षण की आवश्यकता है? यह प्रशिक्षण कितना खर्चीला है एवं कहाँ उपलब्ध है?
6. **उन्नति के अवसर :** देखना चाहिए कि व्यवसाय में प्रवेश करने की क्या पद्धति है? कितनी आयु की जरूरत होती है? प्रति स्तर पर कितने दिन औसतन कार्य करना पड़ता है? किस प्रकार का निरीक्षण कार्य होता है? भविष्य में उन्नति के क्या अवसर हैं?
7. **वेतन :** व्यवसाय में प्रारंभिक वेतन क्या हैं? पतिवर्ष कितनी वृद्धि होगी? अंतिम वेतन क्या है? वेतन दैनिक दिया जाता है अथवा साप्ताहिक या मासिक? वेतन के अलावा अन्य सुविधाये यथा—निशुल्क चिकित्सा, मकान इत्यादि का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।
8. **व्यवसाय का इतिहास:** व्यवसाय का अध्ययन करते समय व्यवसाय का संक्षिप्त इतिहास भी जानना अति आवश्यक हो जाती है। व्यवसाय के इतिहास के माध्यम से व्यवसाय का स्थापित एवं दीर्घता का बोध हो जाता है। इससे हमें यह ज्ञान होता है कि व्यवसाय उन्नति के पथ पर है या इसके विपरीत।
9. **अन्य कर्मचारीगणों का अध्ययन :** यह अवश्य देखना चाहिए कि व्यवसाय में किस प्रकार के कर्मचारियों की संख्या अधिक है क्योंकि उन्हीं के साथ कार्य संपन्न करना पड़ेगा।
10. **सामग्री जिस पर कार्य करना है :** किस प्रकार के सामग्री पर कार्य करना है, इस बात को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए क्योंकि कुछ सामान स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है तथा कुछ सामान अधिक जोखिमपूर्ण होता है।

11. **अनुभव वांछित :** व्यवसाय कितना अनुभव चाहता है या बिना अनुभव के ही कार्य चल जायेगा? अनुभव कहाँ से प्राप्त किया जा सकता है। इत्यादि तथा नजर में अवश्य रखने चाहिए।
12. **कार्य की नियमितता :** क्या काय पूरे साल रहता है? कार्य चीनी करखानों की भाँति वर्ष के कुछ ही महीने तो नहीं रहता है? इत्यादि तथ्य नजर में अवश्य रखने चाहिए।
13. **व्यवसाय का संगठन :** देखना चाहिए कि व्यवसाय का संगठन कैसा है? क्या एकाधिकार व्यापार है? क्या एक मालिकाना व्यापार है? क्या साझेदारी व्यापार है? क्या संयुक्त स्कन्ध प्रमण्डल है? क्या सहकारी सिद्धांतों पर तो आधारित नहीं? सरकारी है या प्राइवेट।
14. **नियुक्ति का स्थान :** कार्यस्थान की जलवायु, भाषा, यातायात के साधन, खाद्य-सामग्री, स्वदेश से दूरी इत्यादि बातों का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

प्रगति की जाँच

नोट –

- जो रिक्त स्थान नीचे दिया गया है वहाँ अपने उत्तर को लिखें।
- जो इकाई के अंत में उत्तर दिये उसके साथ अपने उत्तर की तुलना करना।

प्रश्न 4. व्यावसायिक दृष्टिकोण में अनुशासन का क्या महत्व है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

व्यावसायिक शिक्षा में विद्यालय का दायित्व

व्यावसायिक शिक्षा के लिए विद्यालय एक महत्वपूर्ण स्थान है। अच्छे प्रशासन हेतु यह आवश्यक है कि प्रधानाचार्य दायित्वशाली शासक हो जिससे विद्यालय के संपूर्ण कार्य सुचारु रूप से संपन्न हो सकें। इस प्रकार निर्देशन संबंधी समस्त कार्य चाहे वे केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित हो या राज्य सरकार द्वारा या किसी अन्य संस्था द्वारा, उसी समय सफलतापूर्वक संपन्न किये जा सकते हैं जब प्रधानाध्यापक योग्य शासक हो। बिना योग्य प्रधानाध्यापक के अच्छी से अच्छी योजना भी सफल नहीं हो सकती है। व्यावसायिक शिक्षा में उनका पूर्ण विश्वास हो तथा इस

शिक्षा हेतु वह स्कूल में उचित वातावरण बना सकता है, समस्त अध्यापक वर्ग को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित वर्ग को इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। अपने परामर्शदाता के माध्यम से समस्त अध्यापकों को वह कार्य वितरण कर सकता है। वह परामर्शदाता के माध्यम से कार्यक्रम की सफलता ज्ञात कर सकता है तथा कमियों को दूर कर सकता है।

परंतु यह समझ लेना कि अकेला प्रधानाध्यापक ही सब कुछ कर सकता है, भूल होगी, क्योंकि कोई कार्यक्रम, चाहे वह व्यावसायिक ज्ञान हो या और कोई, उस समय तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि समस्त कर्मचारी सहयोग न दें। अतः व्यावसायिक शिक्षा में विद्यालय का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

विद्यालय—जीवन जीवन—निर्माण के लिए सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है, अतः इस अवस्था में ही किसी भी प्रकार का परिवर्तन संभव है, बाद में नहीं।

विद्यालय में विविध पाठ्य चलता है छात्र अपनी योग्यता के अनुसार विषय—चयन नहीं कर सकता है। उसके विचार अन्य तथ्यों से भरे रहते हैं, जिनके आधार पर वह विषयों का चयन करता है। अतः उचित विषयों का चयन कराने में विद्यालय का महत्वपूर्ण दायित्व है।

विद्यालय के माध्यम से छात्रों की व्यक्तिगत व्यावसायिक समस्याओं का सामाधान आसानी से कर सकते हैं, अन्य कोई भी संस्था ऐसा नहीं कर सकती है क्योंकि अपने कार्य—जीवन का अधिकांश समय छात्र स्कूल में ही व्यतीत करते हैं।

विद्यालय ही एक ऐसी संस्था है जो छात्र का अति निकट से अध्ययन करती है। वह उससे संबंधित समस्त सूचनाएँ एकत्रित कर सकता है तथा छात्र के रुचि के अनुसार उसकी योग्यता को ध्यान में रखते हुए पक्षपात रहित राय दे सकता है इसके अलावा जन—साधारण की भी स्कूलों पर पूर्ण विश्वास होता है।

व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के अध्ययन में समस्या

भारत में प्रचलित क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के अध्ययन के निम्न समस्या की पहचान की गई है :-

1. वर्तमान में व्यावसायिक शिक्षा केवल 11 वीं एवं 12 वीं कक्षा में दी जा रही है।
2. निजी उद्योग के भागीदारिता की कमी है।
3. देश में व्यावसायिक संस्थानों की कम संख्या है।
4. व्यावसायिक शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या पर्याप्त नहीं है।
5. व्यावसायिक सभी स्तरों पर सफल नहीं है।

6. व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल प्रशिक्षण में नए क्षेत्रों की कमी है।
7. कुशल प्रशिक्षकों और देश में शिक्षकों की भारी कमी है।
8. सतत् कौशल के उन्नयन में अवसरों का अभाव है।
9. वर्तमान शिक्षा प्रणाली, मौजूदा और भविष्य उद्योग के कौशल की माँग को लेकर गैर-जिम्मेदार है।

1.7 सारांश

इस इकाई में अनुशासन एवं विषय के भिन्नता को स्पष्ट किया है ताकि बच्चे उसे समझ सकें। शैक्षिक अनुशासन का वर्गीकरण स्पष्ट करके उसका व्यावसायिक शिक्षा के साथ जोड़ा गया है जिसके ज्ञान के द्वारा विद्यार्थी अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुसार विषयों का चयन कर सकते हैं और भविष्य में अपने जीवन को सुरक्षित रख सकते हैं। इस अध्याय में व्यवसाय चयन में ध्यान रखने योग्य बातें विचारणीय तथ्य आदि पर चर्चा की गयी है और विद्यार्थियों को अवसर भी प्रदान किये हैं कि वे कक्षा में सभी व्यवसाय पर चर्चा करें और अपनी जिज्ञासा को शांत कर सकें।

1.8 चिंतन हेतु प्रश्न

- शिक्षा के प्रति सोच में समालोचित समझ की आवश्यकता है? आप क्या समझते हैं?
- शैक्षिक अनुशासन में कौन-कौन से विषयों का समावेश किया जायेगा? कक्षा में अपने साथियों से चर्चा करें।
- प्रत्येक अनुशासन में किन विषयों का समावेश किया जायेगा? उदाहरण सहित चर्चा करें।
- शाला में व्यावसायिक शिक्षा क्यों आवश्यक है? इसे विस्तृत करें।

1.9 प्रगति जाँच हेतु उत्तर

प्रश्न क्र. 1 का उत्तर 1.4 में देखें।

प्रश्न क्र. 2 का उत्तर 1.5 में देखें।

प्रश्न क्र. 3 का उत्तर 1.5 में देखें।

प्रश्न क्र. 4 का उत्तर 1.6 में देखें।

1.10 संदर्भ ग्रंथ

लेंका एवं गांधी(2016), अंडरस्टैंडिंग डिसिप्लिन एंड सब्जेक्ट, आर. लाल डिपो. मेरठ।

मायर्स(1980), व्यावसायिक निर्देशक के सिद्धांत और प्रविधियां, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

वर्माएवं उपाध्याय(1990), शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।